व्यंग्य यात्रा

वर्ष : 22 अंक : 88-89 संयुक्तांक जुलाई-दिसंबर-2026

हिन्दी व्यंग्य का जेन-जी स्वर



श्रीनगर चिंतन शिविर पर विशेष सामग्री

संदीप राशिनकर.

मूल्य ₹ 20



अशोक वाजपेयी 'श्रीकांत वर्मा स्मृति सम्मान' से सम्मानित। 'कल्पान्त मल लोढ़ा सम्मान' से प्रो. पुरुषोत्तम अग्रवाल और 'लिली लोढ़ा सम्मान' से सुमन केसरी सम्मानित। 'अज्ञेय राष्ट्र सृजन सम्मान' संयुक्त रूप से सुधांशु राय को 'दिगम्बर विद्योहिनी अक्क महादेवी' के लिए तथा लीलाधर मंडलोई को उनकी आत्मकथा 'जब से आँख खुली है' के लिए प्रदान किया जाएगा।



बुद्धिनाथ मिश्र को जागरण साहित्य सृजन सम्मान से सम्मानित करते श्री राजनाथ सिंह और श्री संजय गुप्ता। 'कलिंग लिटरेचर फेस्टिवल' का 'बुक ऑफ द ईयर' अवार्ड से मालिनी अवस्थी, मनीष मिश्र, पंकज सुबीर, चुनुस खान, सीमा कपूर और सत्यसरण होंगे सम्मानित



संतोष दीक्षित को कथाक्रम सम्मान 2026, माधव कौशिक को नंदलाल पाठक साहित्य सम्मान तथा बलराम, गिरीश पंकज, रूबी, भूषण को नई धारा सम्मान घोषित।



ज्ञान चतुर्वेदी को हरिशंकर परसाई सम्मान एवं रावुरकर राव स्मृति सम्मान शिव उपाध्याय को।



कोंकण राजभाषा विभाग द्वारा 'भारतीय साहित्य के इतिहास में व्यंग्य की भूमिका' विषय पर, परिचर्चा एवं व्यंग्य पाठ का आयोजन। प्रेम जनमेजय के नाटक 'सीता अपहरण केस का इप्टा द्वारा बेंगलुरु में मंचन और वेशर्मेव जयते का अभ्यास द्वारा मुंबई में मंचन।

व्यंग्य यात्रा एवं जम्मू कश्मीर हिन्दी अकादमी के संयुक्त तत्वावधान में श्रीनगर चिंतन शिविर



व्यंग्य यात्रा

सार्थक व्यंग्य की

रचनात्मक त्रैमासिकी

जुलाई-दिसंबर 2026

वर्ष-22 **अंक-88-89**

एक अंक : 20 रुपए

पांच अंक : सौ रुपए

डिजिटल रूप में NotNul पर उपलब्ध

neelabhsrivastav@gmail.com

सहयोग राशि 'व्यंग्य यात्रा' के नाम से ही भेजने का कष्ट करें।

संपादक

प्रेम जनमेजय

73, साक्षर अपार्टमेंट्स
ए-3 पश्चिम विहार
नई दिल्ली-110063
मोबाइल : +91-9811154440

ई-मेल-
premjanmejai@gmail.com
yatravyangya2004@gmail.com

आवरण : संदीप राशिनकर की कलाकृति पर आधारित।

रेखाचित्र : संदीप राशिनकर

कानूनी सलाहकार (अवैतनिक)
एडवोकेट कुलदीप आहूजा
उच्च न्यायालय

प्रबंध सहयोग
राम विलास शास्त्री

मोबाइल : +91-9911077754
+91-8920111592

'व्यंग्य यात्रा' में प्रकाशित लेखकों के विचार उनके अपने हैं। विवादास्पद मामले दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे। संपादन एवं संचालन पूर्णत: अवैतनिक और अव्यावसायिक।

अनुक्रम

आरंभ 1-3

चंदन धिरें- 4-6
यशपाल निर्मल, राकेश सोहम्, श्रीकांत चौधरी, सूर्यकांत शर्मा, मधु आचार्य आशावादी, विप्रम

पाथेय 7-9
हरिशंकर परसाई– आवारा भीड़ के खतरे 7
धूमिल विद्रोह 8
राग दरबारी के जेन जी रुप्पन बाबू 9

चिंतन 10-21
विजय बहादुर सिंह– परसाई की याद में 10
राजेंद्र वर्मा– व्यंग्य की भाषा 15

पद्य व्यंग्य 22-28
राजकुमार कुम्भज– कल की कहानी कल देखेंगे, घर छोड़ा तो घर नहीं हुआ... 22
दिविक– बूढ़ा, एकांत मेरी रचना... 23
हूबनाथ– 'गिरो!' 24
सुभाष राय– मैं गिरूंगा नहीं,..किला देखने 25
मनोज भावुक– गजल 25
मनोज साहू– निडर की गजलें 26
संतोष कुमार झा– आजादी 27
मुकुल शर्मा– टमाटर, मैं चम्पू कवि... 28

गद्य व्यंग्य 29-40
नीरज दइया– साहित्य का संबंधशास्त्री 29
आसिम अनमोल– दरवाजा खोलिए मैं ईगो हूँ 31
रामस्वरूप दीक्षित– प्रेम में पराजय 31
डॉ. राम कुमार जोशी– हंगामा क्यूं बरपा 32
विजी श्रीवास्तव– मां शारदे को प्रणाम 33
आन्नदा पाटनी– रामलला की वापसी 34
कृष्ण हरिपुरिया– दुखी दिखने की कला 35
निर्मल गुप्त– व्यंग्य का आलोचक.... 36
प्रेम विज– नाई की दुकान में सरकार 37
मनमोहन चौरे– साहित्य का सौदा 39
नीलम कुलश्रेष्ठ– सबके दाता राम 39
राम शास्त्री– वीणा वाले इन्फ्लुएंसर 40

हिंदी व्यंग्य का जेन जी स्वर 41-128

चिंतन के अग्रज स्वर–
अरविंद तिवारी– नए व्यंग्यकारों, सावधान!, **जवाहर चौधरी–** व्यंग्य के दरवाज़े पर जेन जी, **अरुणेंद्र नाथ**– ...जेन ज़ी के नए तेवर, **परेश चतुर्वेदी**– ...बस बदली सवारी

जेन जी स्वर के सात त्रिकोणीय

त्रिकोण का पहला कोण 47–59

पंकज प्रसून– 47–51
व्यंग्यकार समाज का न्यायधीश कम, सजग दर्पण अधिक है, एक छोलाछाप सर्जन की कथा, युद्ध में फँसा सफेद कबूतर

सुरेश कुमार मिश्रा 'उरतृप्त'– 52–55
मेरे विषय कहीं दूर आसमान से नहीं टपकते, जिंदगी बनाम डाउन पेमेंट, तीस सेकंड की मौत

विनोद कुमार विक्की– 56–59
व्यंग्य केवल पाठकों के साहित्यिक, मनोरंजन का माध्यम नहीं, धृतराष्ट्र की समीक्षात्मक बैठक, भारतीय भक्त की अभिलाषा

त्रिकोण का दूसरा कोण 60–74

स्वाति चौधरी– 60–64
मुर्गाबांग न दे तो क्या सुबह नहीं होगी, जादुई गलियारा, पिपहरीपुर का महाउत्सव

रिंकल शर्मा– **65–68**
व्यंग्य समाज का दुश्मन नहीं उसका आईना है, चार लोग क्या कहेंगे, बुलाये सलाहकार

प्रियंका सैनी– **69–74**
मेरी नज़र में व्यंग्य, नमामि नतमस्तक, दुनिया गोल, मेरे मीठे बोल

त्रिकोण का तीसरा कोण 75–86

प्रिय अभिषेक– **75–79**
व्यंग्य का नायक कौन, पीएचडी का प्राप्य स्टॉकहोम सिंड्रोम, माचिस कहाँ है

भौमिक नामदेव– **80–83**
हँसना भी आवश्यक है और सोचना भी, भ्रष्टाचार महोत्सव 2.0, ढनेरी का पत्थर

सुखबीर कौर– **84–86**
व्यंग्य : मेरी दृष्टि में, चतुरानन की उपाधि–मृगतृष्णा, जब भ्रष्टाचार शिष्टाचार बन,

त्रिकोण का चौथा कोण **87–96**

अभिषेक अवस्थी– 87–90
व्यंग्य की धार खतरे में दिख रही है, कमेंटबाजी में वारिष्ठापन, सांप पर निबंध

सौरभ जैन– 91–93
मेरी दृष्टि में व्यंग्य, कुत्ते के बच्चे से..., और बताओ यार...

शशांक भारतीय– **94–96**
व्यंग्य पीड़ा के हद से गुजर..., तुलसीदास, खेत और शहर

त्रिकोण का पांचवा कोण **97–106**

अंकित शर्मा **97– 100**
व्यंग्य हास्य के पुट एवं..., कैरम रमवानु, ग्रीन टी..., मैं मात्र एक पर्यावरणवादी

सूर्यदीप कुशवाहा– 101–102
व्यंग्य का दायरा बहुत फैला है, झाड़ू हाथ में और गंदगी..., तैरता हुआ शाही पनीर

विश्वास व्यास– 103–106
बदले हुए समय का व्यंग्य..., सफलता का अचूक फार्मूला, अशांति के बल से...

त्रिकोण का छठा कोण **107–117**

गगन तलरेजा– 107–109
भविष्य अंधकारमय दिखता है, नया युग, नए अर्थ, हुस्न–ए–जानाँ की तारीफ़...

अनिल 'अयान'– 110–113
व्यंग्य लेखन, चुनौतियां, विवशताएं..., मूर्खिस्तान के मूर्खाधिराज, 'परपोषी', 'समीक्षक'...

पूजा गुप्ता– 114–117
व्यंग्य धार और गहराई..., ब्याह के ढोल बड़े सुहावनें, कैसी–कैसी हितैषिने

त्रिकोण का सातवां कोण– **118–128**

भारती वर्मा– 118–120
...वैचारिक सर्जिकल स्ट्राइक' है, संस्कारों की तेरहवीं!, अंधा बांटे रेवड़ी...

चंचल सिंह 'साक्षी'– 121–125
हास्य की हल्की फुहार..., व्यस्त होने का देशव्यापी संकट, मौन अब नेटवर्क से बाहर है

ललित शौर्य– 126–128
...व्यंग्य का ढर्रा बदल रहा है, अर्थव्यस्था को संभालते डगमगाते..., साहित्य का डिजिटल कल्याण

त्रिदिवसीय ग्रीनगर चिंतन शिविर **129-152**
श्रीनगर चिंतन शिविर के सहयात्री व्यंग्यधर्मी
स्मिता सिन्हा– चिनार की छाँव में..., **राकेश पाण्डेय–** हिंदी सेवक और हिंदी, **बलराम–** गंदी बात, मसीहा की आँखें, **सूरत ठाकुर–** झल्ली लाल का दुख, **गंगाराम राजी**– गुरू घंटाल, **कृष्ण चंद्र महादेविया**– परिचय, **केवल कुमार केवल**– यूज बल्ब, **रमेश सैनी**– ढूंठा लोकतंत्र, **गोपी बूबना**– शुक्र भगवन तूने पागल बनाया, **कृष्णा ठाकुर, पौमिला ठाकुर, किरण बाला, मलिक राजकुमार**– कथा वाचक व्यंग्यालू, **ललित्य ललित**– पांडेय जी नया साल और एजेंडा, **आशा कुंद्रा**– एम.ए. संस्कृत, **रणविजय राव**– स्वर्ग का सॉटवेयर अपडेट करने की गुजारिश, **सूर्यकांत शर्मा**– व्यंग्य क्या?, **उद्घाटन सत्र**– विशिष्ट अतिथि यशपाल निर्मल का वक्तव्य, **समापन सत्र**– मुख्य अतिथि का वक्तव्य,
कृष्ण कुमार आशु– ...चहेते रचनाकार गोविंद शर्मा 153–154

समीक्षा- **155 -162**
बी. एल. आच्छा : जीवट का समकालीन पृष्ठ, प्रेम जनमेजय 'अन्विति' का कहानी, डॉ. अतुल चतुर्वेदी, अनुराग वाजपेयी के व्यंग्य, प्रेम जनमेजय हुमा का पँख, कुछ पत्रिकाएं– मुक्तांचल, कथा समवेत, साहित्य सप्तक, ये इश्क नहीं असां, युग सारथी धर्मवीर भारती, डिप सा'ब की तीसरी बेटी, अर्जुन चव्हाण के गजल संग्रह, गणेश गनी उम्र की गुल्लक, प्रेम जनमेजय सतर्क व्यंग्यधर्मी..., प्रमोद सागर तिरछी नज़र का पोस्टमार्टम, सूर्यकांत शर्मा संपूर्ण, दस्तावेजी उपन्यास, श्रीकांत आप्टे– विसंगति की तलाश में

समाचार 163-168

आरंभ

सत्ताएं विरोध कभी बर्दाश्त नहीं करती हैं। वे विरोध के स्वर को दबाने के लिए अफीम चटाने के षड्यंत्र रचती रहती हैं। बुजुर्गीयत की उस सोच को निरंतर हवा देती हैं, जिसकी सोच डर के आगे केवल डर ही होता है। विरोध की चिंगारी की भ्रूण–हत्या के लिए वे दमन का भय पैदा करती हैं। अपने ठोस महलों के निर्माण और विकास के लिए वे वंचितों के मन में केवल 'सपनों के महल' के विकास के स्वप्न निर्मित करती हैं। रोटी के टुकड़े डालकर अपने वफादारों और विश्वासपात्रों की सेना तैयार करती हैं तथा विरोध की आग न सुलगने देने के लिए) लकड़ियों को निरंतर गीला करती रहती हैं।

पर जब चिंगारी फूटती है, तो गीली लकड़ियों को भी जंगल की आग बना देती है। वह बुजुर्ग सोच की मंद गति को किसी धावक की गति प्रदान कर देती है। यह चिंगारी कभी लक्ष्मीबाई के रूप में फूटती है, तो कभी भगत सिंह, शिवराम राजगुरु और सुखदेव बनकर प्रस्फुटित होती है। यही चिगारी, स्वतंत्र भारत में यंग टर्क के रूप में भी उभर चुकी है।

यह चिंगारी एक ही ढर्रे पर चलने वाले, सुस्त हो चुके बुजुर्ग विरोध को गति देती है। कैटेलिस्ट (उत्प्रेरक) का काम करती है। संघर्ष को निडर बनाती है। परंपराओं को भविष्य की नई सोच के लिए झकझोरती है और नए प्रयोगों के लिए साहस देती है। सुखद अतीत में जीने की सोच को बदलकर, यह मानव जाति के सुखद भविष्य के लिए प्रगतिशील पथ का निर्माण करती है।

विरोध के दमन के लिए षड्यंत्र रचे जाते हैं और उसे दिशाहीन करने के लिए उस विरोध को सत्ता के गलियारों की ओर मोड़ दिया जाता है। सत्ता–सुख में सहभागिता के स्वादिष्ट व्यंजन परोसे जाते हैं। इन खतरों से सावधान रहकर ही जेन जी नया इतिहास रच पाते हैं, अन्यथा वे सत्ताकामी बनकर विसंगतियों के भंवरजाल में फँस जाते हैं। इसलिए पुनरुक्ति दोष के बावजूद, संदर्भ मिलते ही, मैं कहता हूं कि विसंगत समय में विरोध नपुंसक होने से बचाता है।

विरोध की अपनी भ्रांतियाँ भी होती हैं। कुछ विरोध केवल देखने में विरोध लगते हैं, पर वे कोई गंभीर घाव नहीं देते, केवल हल्की खरोंच देकर रह जाते हैं।

पिछले दिनों एनी कार्सन को साहित्य का नोबेल पुरस्कार मिला। गंभीर रचनाधर्मी और पत्रकार अंजुम शर्मा ने उनका एक साक्षात्कार अपनी फेसबुक वॉल पर साझा किया था। अंजुम शर्मा ने लिखा है, 'पैरिस रिव्यू में छपा एक इंटरव्यू पढ़ रहा था। उनसे पूछा गया कि अमेरिका में अब आलोचनात्मक ढंग से सोचने की आदत क्लचरली कम होती जा रही है। एक विचारक और शिक्षक के तौर पर आपको इसकी क्या वजह लगती है?'

एनी कार्सन कहती हैं, यहाँ 'ठहराव' का न होना समस्या है। आप जानते हैं कि मैं एक क्लासिसिट हूँ। प्राचीन यूनानी भाषा पढ़ाती रही हूँ. मेरे समय में यूनानी सीवने का तरीका कुछ ऐसा था कि मूल पाठ पढ़ो, जो शब्द समझ में न आए उन्हें वखोजो, शब्दकोश में उनका अर्थ देखो और फिर उसे लिखो।

जब शब्दकोश में हम किसी शब्द को ढूँढ़ने थे तो उसमें समय लगता था। उस दौरान एक तरह का 'ठहराव' और 'संयम' पनपता था। आप उस समय बिल्कुल विचारहीन या ब्लैंक नहीं होते थे। आपके मन में उस शब्द को लेकर एक सवाल होता था। आप पन्ने पलटते हुए उसका सही अर्थ खोज रहे होते थे। यह दिन के बाकी समय और कामों से बिल्कुल अलग तरह की मानसिक स्थिति होती थी।

यह 'ठहराव' बहुत मूल्यवान है क्योंकि इस दौरान उस शब्द को लेकर आपके सोचने और महसूस करने के तरीके में कुछ नया घटित होता है...

मुझे दुःख है कि यह 'ठहराव' अब खोता जा रहा है।

मुझे भी लगता है कि विरोध के लिए भी एक ठहराव की आवश्यकता रहती है। यह ठहराव ही हमें 'संयम' और चिंतन देता है।

हिंदी व्यंग्य का जेन जी स्वर

तेरह वर्ष पूर्व, 'व्यंग्य यात्रा' ने 'हिंदी युवा व्यंग्य रचनाकार विशेषांक' प्रकाशित किया था। पत्रिका का यह अंक हिंदी व्यंग्य का जेन जी स्वर पर केंद्रित है। शीर्षक बदला है, पर लक्ष्य वही है। यह विशेषांक, मुण्डे मुण्डे मतिर्भिन्ना वाले रचनात्मक युवा स्वर के हर स्वर के लिए जंतर–मंतर की भूमिका निभाएगा।

'व्यंग्य यात्रा' ने सदैव युवा स्वर को अपने मंच पर प्राथमिकता दी है। इक्कीसवीं सदी में अनेक युवा अपने व्यंग्य–बाणों के साथ लेखन के युद्वक्षेत्र में उतरे हैं। सबके तरकश व्यंग्य के भविष्य–निर्माण में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करने की दृढ़ इच्छा से भरे हुए हैं। इक्कीसवीं सदी की यह पीढ़ी सोशल मीडिया जैसे आधुनिक अस्त्र–शस्त्रों से लैस है और अपने समय को एक अलग दृष्टि से देख–परख रही है। उसके सामने अनेक चुनौतियाँ हैं। समकाल में टच–स्क्रीन मोबाइल, लैपटॉप आदि जितने 'टचशील' होते जा रहे हैं, उतने ही इनके उपभोक्ता (यूजर्स) असंवेदनशील होते जा रहे हैं। कृत्रिम मेधा मौलिकता का हनन कर रही है। राजनीतिक, आर्थिक और विशेषकर धार्मिक क्षेत्रों की विसंगतियाँ चुनौती दे रही हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि व्यंग्य की युवा पीढ़ी इन विसंगतिजन्य चुनौतियों को पराजित करेगी।

तेरह वर्ष पूर्व प्रकाशित अंक में त्रिकोण के छह कोण थे। इस बार सात कोण है। हर कोण में तीन व्यंग्यकारों की व्यंग्य के प्रति दृष्टि और दो व्यंग्य रचनाएं सम्मिलित की गई हैं। इस अंक में बीस वर्ष के भौमिक नामदेव से लेकर 45 वर्ष तक के, प्रौढ होते, व्यंग्यकारों की रचनाएं

सम्मिलित है। पिछली बार आयु सीमा 50 वर्ष थी। कुछ ऐसे व्यंग्यकार हैं जिन्हें आप पहली बार पढेंगे।

जनवरी–मार्च अंक भी हिंदी व्यंग्य का जेन जी स्वर पर केंद्रित होगा

इस अंक में अधिकांशतः जेन जी स्वर की रचनाएं हैं। आगामी अंक जेन जी स्वर की रचनाओं पर आलोचनात्मक होगा। अग्रज लेखकों से अनुरोध किया जाएगा कि वे प्रकाशित रचनाओं के आधार पर आलेख/विस्तृत टिप्पणी लिखें।

इस अंक में जेन जी विमर्श के चार ही आलेख है। आलेख तो दस मिले थे यदि सबको शामिल किया जाता तो अंक 250 पृष्ठों का बढती महंगाई–सा विकाराल हो जाता। स्थानाभाव के कारण त्रिकोणीय और द्विकोणीय स्तंभ भी नहीं जा पा रहे हैं।

भारी भरकम अंक के लिए भारी भरकम श्रम करने के लिए राम विलास शास्त्री को धन्यवाद देना स्वयं को धन्यवाद देना है। विपरीत परिस्थितियों में भी राम विलास शास्त्री ने अंक को लाने में रात–दिन वाला श्रम किया है। अब डिस्पैच का श्रम उमेश कुमार पांडेय करेंगे।

श्रीनगर चिंतन शिविर

28 से 30 सितंबर 2026 तक श्रीनगर में आयोजित 'श्रीनगर चिंतन शिविर' ने इसी बहुआयामी कश्मीर से साहित्य के माध्यम से संवाद की एक अर्थपूर्ण पहल की। व्यंग्य यात्रा और जम्मू–कश्मीर हिंदी अकादेमी के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित इस तीन दिवसीय शिविर में देश के विभिन्न हिस्सों से लगभग चालीस साहित्यकारों, व्यंग्यकारों और रचनाकारों ने सहभागिता की। चिंतन शिविर के माध्यम से हिंदी व्यंग्य को कश्मीर में एक ठोस जमीन मिलेगी। शिविर का पूरा विवरण भी इस अंक में जा रहा है।

अप्रैल–सितंबर 2027 अंक ज्ञान चतुर्वेदी एकाग्र–

श्रीलाल शुक्ल के बाद ज्ञान चतुर्वेदी ने न केवल अपने लेखन द्वारा हिंदी व्यंग्य उपन्यास को समृद्ध किया है अपितु अनेक के प्रेरणा केंद्र भी बने हैं। श्रीलाल जी इस ज्ञान चतुर्वेदी की मुक्त कंठ से प्रशंसा करते थे। ज्ञान चतुर्वेदी पर केंद्रित अंक के बहाने से, परसाई, शुक्ल, शरद जोशी, त्यागी, मनोहर श्याम आदि के बाद के समय को विश्लेषित भी किया जा सकेगा। व्यंग्य उसी युग में ठहरा है अथवा उसने बदलाव की ब्यार बहाई है। ज्ञान चतुर्वेदी रचनात्मक यात्रा युवाओं के लिए मार्गदर्शक का काम करेगी। इस सूचना को पढ़ने के बाद, अभी बहुत समय है जैसा आलस्य न करें। 'व्यंग्य यात्रा' का द्वार अहर्निश खुला हुआ है। संपादक के कंधे का वेताल उसे रात–दिन कोंचता रहता है।

वल्लभ डोभाल, संजीव कुमार और गोविंद शर्मा का यूं जाना

पिछले दिनो व्यंग्य यात्रा ने अपने शुभचिंतक सहयात्रियों– बल्लभ डोभाल और गोविंद शर्मा को खो दिया। यह एक अपूर्ण क्षति है। तीनो को व्यंग्य यात्रा परिवार की विनम्र श्रद्धांजली। इस अंक में कृष्ण कुमार आशु द्वारा लिखित गोविंद शर्मा जी पर आलेख जा रहा है।

संजीव कुमार का जाना

संजीव कुमार की रचनात्मक सक्रियता पागलपन तक थी। वह जिस काम के पीछे पड़ जाते हैं पागलपन की हद तक पड़ते हैं। ये एक ऐसा पागलनपन है जो किसी मजनू या फरहाद में होता है।

संजीव कुमार एक जिज्ञासु प्रवृति के थे। उन्होंने अधिकतम संख्या में पुस्तके रचना का रिकार्ड बनाया है। इस कारण उनका नाम इडिया बुक ऑफ रिकार्ड में ससम्मान शामिल किया गया।

पिछले कुछ वर्षों से वे हिंदी व्यंग्य आलोचना को समृद्ध कर रहे थे। इस वर्ष उन्हें व्यंग्य चिंतक सम्मान से सम्मानित कर व्यंग्य यात्रा गौरवान्वित हुई थी।

संजीव कुमार के जाने पर मे अपने अभिन्न मित्र, हितचिंतक बंधु और नेकदिल इंसान की खोया है। जितना मैं उनसे जुड़ा था उतना ही मेरे परिवार उनसे जुड़ा।

बल्लभ डोभाल का जाना

श्रद्धेय बल्लभ डोभाल का जाना हिंदी जगत की अपूर्णीय क्षति तो है ही, व्यंग्य की भी अपूर्णीय क्षति है। वे व्यंग्य यात्रा के, सबसे अधिक आयु के पाठक थे। अंक नहीं मिलता तो फोन करते।

मार्च 2026 को मेरा फोन व्यस्त था वे इस बीच दो बार फोन कर चुके थे। मुक्त होकर मैंने फोन किया। प्रणाम किया तो उनकी शिकायत और जिज्ञासा एक साथ सुनाई दीं, 'कहाँ व्यस्त थे? दो बार फोन किया। 'व्यंग्य यात्रा' का नया अंक कब आ रहा है?'

मैंने कहा, 'आदरणीय, 20 मार्च तक आ जाना चाहिए। डाक विभाग की कृपा रही तो आपके जन्मदिन से पहले आपको मिल जाएगा।' वल्लभ डोभाल जी का 97वाँ जन्मदिन 30 मार्च को होता है।

मैंने कहा, 'इस उम्र में भी आपकी अध्ययनशीलता न केवल आश्चर्यचकित करती है, प्रेरित भी करती है।'

वे बोले, 'काहे की प्रेरणा... पलंग पर पड़े रहते हैं...प्रेम, थक गया हूँ।'

'आपने साहित्य को इतना दिया है कि...'

'क्या दिया है...कौन जानता है वल्लभ डोबाल को...हमसे पहले के बड़े नाम ही दोहराए जाते रहते हैं।'

'आप इतनी उत्सुकता से 'व्यंग्य यात्रा' की प्रतीक्षा करते हैं, मुझे सार्थक काम करने का संतोष मिलता है।'

'तुम अलग तरह की पत्रिका निकाल रहे हो...'

इसके बाद दस मिनट तक उनसे साहित्य और उसकी दुनिया की तोताचश्मी चाल पर बातें हुई।

'व्यंग्य यात्रा' को गर्व है कि उसके हर अंक को लेकर उनकी ऐसी ही उत्सुकता रहती थी। इस अंक को इतनी उत्सुक्ता से पाने की उत्कट इच्छा अब...

भिक्षाम् देहि...

शुभचिंतकों!

'व्यंग्य यात्रा' को आर्थिक दृष्टि से समृद्ध करने के लिए– रश्मि कबीरन, श्रीकांत चौधरी, कुलदीप अहूजा, लालित्य ललित, गोपी कृष्ण बूबना, मुकेश श्रीवास्तव, दिवाकर, प्रोमिला ठाकुर, कार्तिक उपाध्याय और सुरेद्र सिंह का आभार।



यशपाल निर्मल श्रीनगर

हिंदी साहित्य में व्यंग्य को एक स्वतंत्र और गंभीर विधा के रूप में प्रतिष्ठित करने में जिन गिने–चुने प्रयासों ने दीर्घकालिक और गहरा प्रभाव छोड़ा है, उनमें 'व्यंग्य यात्रा' पत्रिका का नाम सर्वोपरि है। यशस्वी संपादक डॉ. प्रेम जनमेजय के कुशल मार्गदर्शन में यह पत्रिका अपने प्रकाशन के 22वें वर्ष में प्रवेश कर चुकी है और इसका 87वाँ अंक इसका जीवंत प्रमाण है। एक सजग पाठक के दृष्टिकोण से इस पत्रिका के अनुक्रम और इसके स्वरूप को देखना हिंदी व्यंग्य के समकालीन परिदृश्य और उसकी विकास यात्रा को समझने जैसा है। यह पत्रिका केवल हास्य–व्यंग्य का संकलन नहीं है, बल्कि अपने ध्येय वाक्य 'सार्थक व्यंग्य की रचनात्मक त्रैमासिक' को पूरी तरह चरितार्थ करती है।

इस अंक के अनुक्रम पर दृष्टि डालते ही इसकी वैचारिक और विधागत विविधता का पता चलता है। पत्रिका को केवल व्यंग्य लेखों तक सीमित न रखकर इसे झाँकी, पाखें, चिंतन, व्यंग्य–निबंध, कविता और समीक्षा जैसे महत्वपूर्ण स्तंभों में विभाजित किया गया है। यह वर्गीकरण दर्शाता है कि संपादक मंडल व्यंग्य को केवल मनोरंजन का साधन नहीं मानता, बल्कि समाज, राजनीति और मानवीय वृत्तियों पर तीखा प्रहार करने वाला एक रचनात्मक हथियार मानता है। 'चिंतन' खंड के तहत शामिल किए गए आलेख पाठकों को समकालीन विसंगतियों पर गहराई से सोचने के लिए विवश करते हैं, जो आज के समय में सोशल मीडिया पर तैरते सतही व्यंग्य से बिल्कुल अलग और प्रासंगिक हैं। लेखकों और कवियों की सूची इस पत्रिका की सबसे बड़ी थाती है। इस अंक में शैलेंद्र शरण, यश मालवीय, बलवीर त्यागी, रामशरण जोशी, अशोक चक्रधर, मुकुल शर्मा, ज्ञान चतुर्वेदी, रमेश सैनी, अरविंद तिवारी और ममता कालिया जैसे हिंदी साहित्य और व्यंग्य जगत के शीर्ष नामों की उपस्थिति यह सुनिश्चित करती है कि पाठकों को उच्च स्तरीय और परिपक्व पठन सामग्री मिले। स्थापित लेखकों के साथ–साथ नए और समकालीन रचनाकारों को भी इसमें पर्याप्त स्थान मिला है, जो व्यंग्य की परंपरा को आगे बढ़ाने के लिए एक सराहनीय कदम है। व्यंग्य कविताओं का खंड भी बेहद समृद्ध प्रतीत होता है, जहाँ रोज़मर्रा के जीवन से लेकर वैश्विक चिंताओं को काव्यात्मक तंज के साथ पिरोया गया है।

पत्रिका का समीक्षा खंड (पुस्तक संग संवाद) एक अन्य अत्यंत महत्वपूर्ण पहलू है। अक्सर पत्रिकाओं में व्यंग्य पुस्तकों की समीक्षाओं को उतनी गंभीरता से नहीं लिया जाता, लेकिन 'व्यंग्य यात्रा' ने व्यंग्य की आलोचना और मूल्यांकन के लिए एक सुदृढ़ मंच तैयार किया है। जय प्रकाश पांडेय, ममता कालिया और यशवंत व्यास जैसे मनीषियों द्वारा की गई पुस्तकें और उनकी समीक्षाएं पाठकों को नई किताबों से जोड़ने और उन पर एक स्वस्थ विमर्श खड़ा करने में मदद करती हैं। कलात्मक पक्ष की बात करें तो संदीप राशिनकर की आवरण कलाकृति और रेखाचित्र पत्रिका को एक विशिष्ट दृश्य पहचान प्रदान करते हैं। एक पाठक के लिए पत्रिका का लेआउट, साफ–सुथरा मुद्रण और स्पष्ट अनुक्रम पठन के अनुभव को और अधिक सुगम तथा आनंददायक बनाते हैं। 20 रुपये के अत्यंत किफायती मूल्य पर इतनी समृद्ध साहित्यिक सामग्री उपलब्ध कराना हिंदी पाठकों के प्रति इसके समर्पण को दर्शाता है। संक्षेप में, 'व्यंग्य यात्रा' का यह अंक हिंदी व्यंग्य की गरिमा को अक्षुण्ण रखने और समाज को आईना दिखाने के अपने संकल्प में पूरी तरह सफल दिखाई देता है। यह पत्रिका हर उस पाठक के संग्रह में होनी चाहिए जो शब्दों की मारक क्षमता और समाज सुधार की भावना में विश्वास रखता है।



राकेश सोहम्, जबलपुर

व्यंग्य संसार की प्रतिष्ठित त्रैमासिकी पत्रिका व्यंग्य यात्रा में प्रकाशित होना अपने आप में एक सुखद और संतोषदायक अनुभव है। इक्कीस वर्षों से निरंतर प्रकाशित यह पत्रिका व्यंग्य जगत की एक अनूठी, समावेशी और गंभीर साहित्यिक परंपरा का निर्वाह कर रही है।

इस अवसर पर वरिष्ठ व्यंग्यकार एवं व्यंग्य यात्रा के संपादक आदरणीय श्री प्रेम जनमेजय जी के प्रति हृदय से आभार। किसी भी साहित्यिक पत्रिका के पीछे संपादक की जो अथक साधना, धैर्य और प्रतिबद्धता होती है, उसे निकट से देखकर उनसे बहुत कुछ सीखने को मिलता है।

अमूमन अधिकांश साहित्यिक पत्रिकाओं में स्थान की अपनी सीमाएँ होती हैं। यदि आप व्यंग्यकार हैं तो प्रायः 700–800 शब्दों की रचनाएँ अपेक्षित रहती हैं। ऐसे में अनेक रचनाकार स्वाभाविक रूप से लघुकथा की ओर उन्मुख हो जाते हैं। कहानीकारों को अपेक्षाकृत अधिक स्वतंत्रता होती है; वे कथ्य की आवश्यकता के अनुसार विस्तार ले सकते हैं।

मैंने व्यंग्य यात्रा के लिए लगभग 3050 शब्दों की एक व्यंग्य–कथा भेजी थी। सच कहूँ तो भेजते समय स्वयं भी लगा कि इतनी लंबी रचना को पढ़ना, उस पर विचार करना और प्रकाशन का निर्णय लेना आसान नहीं होगा। लेकिन प्रेम जनमेजय जी ने पूरे धैर्य और मनोयोग से उसे पढ़ा। यह उनके संपादकीय समर्पण का प्रमाण है।

मैंने उनके पास दो रचनाएँ भेजी थीं। पहली लगभग 700 शब्दों की, पत्रिका और समाचारपत्र– दोनों के अनुकूल एक व्यंग्य–रचना थी। उसे उन्होंने स्वीकार भी